

बंगाली महल (1565-69 ई०)

बंगाली महल एक विशाल महल था जो मूल रूप से दक्षिण-पूर्वी बुर्ज से, जिसे बंगाली बुर्ज कहते हैं, मच्छी भवन तक विस्तृत था। ये यमुना की ओर स्थित था, जिससे इसे सुहावने दृश्य, ताजी हवा और निरन्तर जलापूर्ति की सुविधा प्राप्त थी। इसे मुगल सम्राट अकबर ने बनवाया था। इसके भवनों में वृत्ताकार बाँगलादार छज्जे और छतों के प्रयोग के कारण ही इसका नाम बंगाली महल पड़ा था। इस महल के नीचे दो मंजिलों में तहखाने बने हुए हैं। इसके उत्तरी भाग में स्थित भवन को तुड़वाकर शाहजहाँ ने श्वेत संगमरमर के महल बनवा दिये। शेष भाग में आज 'अकबरी महल' और 'जहाँगीरी महल' स्थित है। अकबरी महल के मध्य में एक विस्तीर्ण आँगन है, जिसके चारों ओर आवासीय भवन बने हुए थे। इनमें केवल नदी की ओर के कक्ष ही शेष रह गये हैं। इस महल में छोटे-छोटे कई अन्य भाग, आँगन, प्रसाधन-कक्ष, दासियों के कक्ष और कुएँ सहित एक बड़ी बावड़ी भी है। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के काल में इसे पहले पोवोस्टसार्जेन्ट के निवास की तरह और बाद में जेल की तरह प्रयोग किया गया। जहाँगीरी महल के मध्य में भी एक बड़ा केन्द्रीय आँगन है जिसके चारों ओर भव्य सभामण्डप और आवासीय भवन बने हुए हैं। ये दृष्टव्य है कि ये अधिकांशतः खण्डहर हो गये थे और 1902-1911 के मध्य जॉन मार्शल ने इनका जीर्णोद्धार कराया।

बंगाली महल पूर्णतया लाल पत्थर का बना है, इसकी रचना समतल पद्धति पर हुई है, जिसमें छज्जों और उत्तरंगों को संभालने के लिए अत्यन्त सुन्दर डिजायनों के तोड़े (मदल) लगाये गये हैं। इसमें भाँति-भाँति की समतल छतों का प्रयोग हुआ है और ऐसी छतें बड़े-बड़े सभामण्डपों पर भी बड़ी निपुणता से लगाई गयी हैं। कुछ लदावदार छतें जो पत्थर की कड़ियों और फलकों से बनी हैं, अनूठी हैं। पत्थर की नक्काशी के साथ-साथ चीनीकारी और चूने का अलंकरण भी हुआ है। देशी रूपांकनों के साथ-साथ विशुद्ध इस्लामी अभिकल्पों का प्रयोग इस कुशलता से किया गया है कि पूर्ण संरचना एकरस और एक रूप है। ये सुखद प्रक्रिया मुगलों के संरक्षण में विकसित मिली-जुली संस्कृति की द्योतक है।

इस महल में ही अकबर का हरम (रनिवास) स्थित था। यह एक विशाल संस्थान था। इतिहासकार अबुल फज़ल ने लिखा है—“अकबर ने एक बड़े परकोटे के अन्दर सुन्दर इमारतों का निर्माण कराया है, जहाँ वह विश्राम करता है। यद्यपि यहाँ 5000 से अधिक स्त्रियाँ हैं, उसने प्रत्येक को अलग आवास-गृह दिये हुए हैं।” यह अत्यन्त संवेदनशील मामला था और इसमें कुशल प्रबन्धन की आवश्यकता थी। सुशील स्त्रियाँ और विश्वासपात्र अधिकारी हरम की सेवा में लगाये जाते थे। इसकी सावधानीपूर्वक सुरक्षा की जाती थी। स्त्रियों को 1028 रुपये से 1610 रुपये तक का मासिक वेतन मिलता था। रनिवास की सफाई, प्रकाश व्यवस्था तथा अन्य कार्यों के लिये बड़ी संख्या में दासियाँ नियुक्त की जाती थीं, उनका वेतन 2 रुपये से 51 रुपये तक था। यह सब भलीभाँति व्यवस्थित था और रनिवास सुचारू रूप से चलता था।



THE BENGALI-MAHAL (1565-1569 A.D.)

The Bengali-Mahal was a vast palace which originally extended from the south-eastern tower called Bengali-Burj to the Machchhi-Bhawan. It overlooked the river Jamuna which provided a pleasant landscape, fresh air and constant supply of water. It was built by Akbar and has named as such owing to Bangladar (curved) chhajjas and roofs of its buildings. Underground apartments in two storeys are situated beneath this palace. Shahjehan built his white marble palaces on its northern part. The remaining portion is, at present, split into two palaces: Akbari-Mahal and Jahangiri-Mahal. The former has a spacious court which had mansions around it. Only the river-side apartments have now survived. There were smaller courts and complexes, toilets service quarters and a large Baoli (setp-well) with a well. The East India Company first used it as provost-Sargeants quarters and then as a prison. The later palace also has a large central court with assembly halls and living rooms around it. Most of these were in ruins and were restored by John Marshall between 1902-1911.

The palace is entirely built of red sandstone, construction is tradeated with emphatic use of designed brackets supporting the chhajjas as well as lintels. Flat ceilings have been used in a wide variety even on large assembly halls ingemiously. Some ladaodar ceilings built of stone ribs and panels are unique glazed-tiling and stucco have been used alongwith stone carving for ornamentation. Designs are indigenous as well as exotic. The whole composition is unitary and harmonious. This happly trend is reflective of the composite culture which developed under the Mughals.

Akbar's Harem was housed in this palace historian Abul Fazal recorded that Akbar "made a large enclosure with fine buildings inside, where he reposes. Though there are more than 5000 women. He was given each a separate apartment." It was a sensitive matter and called for efficient organization. Chaste women and trustworthy officers were appointed in the service of the Harem. It was carefully guarded. Women were paid monthly salaries ranging from rupees 1028 to 1610 maid-servants were kept in large numbers for cleaning, lighting and other duties of the household. They received salaries from rupees 2 to 51. All this was well organized and kept in perfect order.

